GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

राजी सेठ की कहानियों में स्त्री
('सदियों से' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रेखा सतीशकुमार पंजाबी

राजी सेठ का जन्म नौशेहार छावनी(अविभाजित भारत), सन् 1935

शिक्षा:- एम.ए. अंग्रेजी साहित्य। विशेष अध्ययन: तुलनात्मक धर्म और भारतीय दर्शन।

लेखन:- जीवन के उतरार्द्ध में शुरू किया, 1975 से। उपन्यास, कहानी, कविता,समीक्षा, निबन्ध आदि सभी विधाओं में लेखन।

उपन्यास:- तत-सम, निष्कवच (दो उपन्यासिकाएँ)

कहानियाँ:– अन्धे मोड़ से आगे, तीसरी हथेली, यात्रा-मुक्त, दूसरे देशकाल में, सदियों से, यह कहानी नहीं, किसका इतिहास, गमे हयात ने मारा, खाली लिफाफा।

अनुवाद:– मदर्स डायरी (अंग्रेजी में), मेरे लई नई (पंजाबी में), मीलों लम्बा पुल (उर्दू में), निष्कवच (गुजराती में),इक्यूनॉक्स (तत-सम का अनुवाद अंग्रेजी में)

अनुवाद कार्य:– जर्मन कवि रिल्के के 100 पत्रों का अनुवाद आक्ताविया पाज़, दायासाकू इकेदा, लक्ष्मी कण्णन, दिनेश शुक्ला की रचनाओं के बहुत से अनुवाद।

राष्ट्रीय:– अन्तर्राष्ट्रीय "हू इज हूँ" में प्रविष्टिव– हिन्दी अकादमी सम्मान, भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार, अनन्त गोपाल शेवडे पुरस्कार, वाग्मणि सम्मान, संसद साहित्य परिषद सम्मान, जनपद अलंकरण आदि-आदि।

इस कहानी संग्रह में कुल दस कहानियां है। इन सब कहानियों में स्त्री की अपनी इच्छा, आकांक्षा, प्रेम, पीड़ा इन सभी को व्यक्त किया है। इन दस कहानियाँ इस प्रकार है – अन्धे मोड़ से आगे, मीलों लम्बा पुल, उसका आकाश, अमूर्त कुछ, अनावृत कौन, गलत होता पंचतंत्र, दूसरे देशकाल में, यहीं तक, फ्लाय ओवर, सदियों से।

प्रेम भावना एवं प्रेम का संवेग: -

राजी सेठ की 'अमूर्त कुछ' कहानी में प्रेम का वर्णन द्रष्टव्य है, जहाँ सुम्मि का प्रेम भक्ति के स्तर का है। कप्पी से अतूट, गहन एवं प्रगाढ़ प्रेम है सुम्मि का।

प्रेम और केवल विशुद्ध प्रेम पर आधारित इस कहानी का संपूर्ण कलेवर ही कुछ अमूर्त है। कथामत एवं शीर्षक को सार्थक करने के लिए अमूर्त संबद्ध है- गहरे तक जुड़ा संबद्ध जहाँ दर्शन, श्रवण, मनन, चिंतन आदि की आंतरिक अनुभूतिमूलक सत्ता है-उनमाद है। यहाँ सुम्मि अपने प्रिय का हर एक पल अत्यंत पारिवारिक व सामाजिक मर्यादा के अनुशासन होते हुए भी अपने लिए सुरक्षित रहते देखना चाहती है – उठना-बैठना, खाना-पीना, सोना-जागना, रोना-चलना सब साथ-साथ हो, कहानी इन्हीं क्रियाओं को सत्यापित करती है। "मैं तब तक अलमारी से सिगरेट, माचिस खिड़की में रखी ऐश और घरती पर पड़ा अख़बार उठा ही रहा था कि देखा, सुम्मि दीवार से सटी प्यालों में चाय ड़ाल रही है और कप्पी उसे देख रहा है एक टक।"[1] भाई की कठिन पहेरदारी है – प्रेम के विरूद्ध अपनी बहन के लिए सुरक्षात्मक सर्तकता बरतते हए।

सुम्मि शायद जानती थी, मैं कप्पी से कितनी भी बँधी हुई, सुम्मि से उसकी संलग्नता बर्दाश्त नहीं करता रहता हूँ। किंतु प्रेम टाले टलता नहीं। दोनों के बीच चाय है। जिस पर एक गहरे रंग की पतली झिल्ली ठहर गयी है। दोनों एक टक एक-दूसरे को देख रहे है। "सुम्मि आराम कुर्सी पर सो गयी है। हाथ की किताब नीचे गिरी पड़ी है। सिरहाने रखा टेबल-लेम्प जल रहा है और कप्पी दरवाजे मैं खड़ा निश्चल, आत्मविस्मृत एकटक उसे देखता रहा"।[2] यहाँ सामाजिक मर्यादा क्या करेगी?नियमन क्या चलेगा? अत: भाई हार जाता है। "वह कोई दूसरा ही संसार है। वहाँ कुछ भी ऐसा मूर्त नहीं, जिस मैं जाकर पकड़ लूँ और कहूँ कि मैं इसे चाहता हूँ, इसे नहीं। यह वांछित है, यह अवांछित वह जो कुछ है मेरी पहुँच और मेरे द्वारा पहुँचायी गयी बाधा से परे है।"[3] यह प्रेम भावनी निरंतर रहती है-कप्पी के जीवन तक और उसके शायद निधन के बाद तक भी। केवल उद्धारक समझता है कि अमूर्त कुछ का एक पक्ष अब इस दुनिया में नहीं रहा। केवल वही जानता है कि कप्पी की मृत्यु का दुख किस गहराई तक है और रहेगा क्योंकि उन दोनों के बीच पनप रहे अमूर्त सबंधो का केवल वहीं एक अकेला गवाह है।

प्रेम यदि वास्तव में प्रेम है तो वह सब त्याग कर सकता है। समर्पण यदि वास्तविक है, बिना लुकाव-झुकाव किये, बिना तो डर किस बात का पा लेना ही प्रेम नहीं है। समांतर चलते हुए भी प्रेम जारी रह सकता है।

'दूसरे देशकाल में' कहानी की नायिका का प्रेमी विवाहित है। प्रेम उस प्रगाढ़ता को पा जाता है जहाँ हवा तक के लिए स्थान नहीं रहता और नैतिक-अनैतिक की संकल्पना लाँघकर शरीरों को एक कर ड़ालने की अनुकूलता ग्रहण कर जाता है। मर्यादाएँ खड़ित हो जाती है और प्रेमिका अपने गर्भ में रोहित के अंश को महसूसती है। वह प्रेम के इस अनमोल प्रतीक को नष्ट नहीं करना चाहती। परंतु प्रेमी प्रेमिका को गर्भपात के लिए तैयार कर लेता है।

त्रिकोणात्मक प्रेम:-

'सदियों से' कहानी की मिन्नी दो ध्रुवो के बीच खड़ी है। एक और पूर्व प्रेमी हेमंत है तो दूसरी और वर्तमान के रूप में साक्षात उपस्थित उसका पति नरेन। हेमंत से वह अतूट प्रेम करती है। नरेन की पत्नी बन कर भी वह हेमंत को भूल नहीं पाती। उसके पत्रों का पुलिंदा किसी पाक ग्रंथ की तरह सीने से लगाये रहती है, मानो पत्रों का वह पुलिंदा स्वयं हेमंत है। उन पत्रों में वह हेमंत की आत्मा को भी अनुभव करती है। सीने से लगाए जाने वाले इन पत्रों को वह एक दिन जला तो ड़ालती है परंतु साथ ही यह अनुभव करती है कि हेमंत के पत्र जले हैं। "अपने आत्मीयों को लोग स्वयं जलाने जाते हैं। कंधो पर लादकर ले जाते है, फिर फूँक आते है। देह फूँक देते है। मोह, ममता पास रख लेते हैं। नष्ट हो जाना चीजों की देह का घर्म है, मन को तो कतई नहीं।"[4] यह प्रेम की पराकाष्ठा है। यद्यपि दांपत्य के लिए वह विषवत् है-एक कालकूट की तरह घातक।

मिन्नी इस स्थिति से उबर पाने का प्रयत्न करती है। "एक और प्रेमी की खींच और दूसरी और पति की परंपरित अधिकारात्मक पुकार। स्त्री होनी की क्या यहीं परिणति है? अपने से लड़ना, जूझना। अपनी निष्ठा को साध्वी सिद्ध करने के लिए हरपल, हरघड़ी पंजो पर उढुंग खडे रहना"।[5]

इतर सबंध:-

विवाहेतर सबंध की प्रवृत्ति हर समाज में चलती चली आ रही है। 'अंधे मोड़ से आगे' कहानी की नायिका अपने पति सुरजीत से तंग आकर अपने बोस मिश्रा की और

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

आकर्षित होती है। यह आकर्षण शनै शनै यौन सबंधो में परिवर्तित हो जाता है। "मिश्रा ने उसे एक बड़े होटल में ठहराया था। कीमंती कपड़े दिलाये थे, घुमाया था, पिक्चरें दिखायी थी और...और पतले जालीदार गाऊन में उसे सदेह देखा, पाया था, इतना कि वह डूबते-डूबते भी काँप जाती थी क्योंकि हर बार मिश्रा के चहेरे पर श्रांत होकर बैठ गयी झुरियों में एक बदचलन अतीत का गहरा उदास कर देनेवाला अहसास उसके मन में चिपका रह जाता था"।[6]

मिश्रा के साथ उसके सबंध होटलों, रेस्तराओं, ऑफिस के बंद एकांत कक्षों में उतप्त होकर उद्दाग आवेग में उसके शरीर की हदों से टकराकर सार्थकता पाने लगे। सराबोर कर जानेवाली विस्मृति, मांसाहारी स्वाद की तृष्णा का निष्प्राण अभ्यास बनकर रह गयी वह। गर्भधारण हो जाने पर वह होंश में आती है।

स्त्री की कोमलता:-

राजी सेठ इस संस्कृति का विरोध अपनी कहानी 'अनावृत कौन' में अंत्यत सूक्ष्मता के साथ करती है। शिमला में कैबरे देखने का आग्रह पत्नी ठुकरा देती है, परंतु पति उसे अपने में ऐसा लगता है जैसे कि कोई उसे ही नग्न कर रहा हो, देक रहा हो, भोग रहा हो। समूचि जाति को ही अनावृत किया जा रहा हो। व्यवसायिक युग में आज का मनुष्य इतना गिर चुका है कि मृत नारी की देह का उपयोग भी यदि रूप्या कमाने के लिए, अर्थाजन के लिए किया जा सके, तो कुछ अनुचित नहीं।

'दूसरे देशकाल में' कहानी का मूल प्रश्न यहीं है कि नायिका और रोहित आपस में प्रेम करते है। रोहित शादी शुदा है। उसकी शादी असंतुलित दिमाग की एक लड़की से हो जाती है। इसलिए उसका वैवाहिक जीवन दुखी है। वह इस हद तक शुचि से प्रेम करता है कि नैतिक-अनैतिक का भान अलक्षित हो जाता है। दोनों देह सुख का भोग भी समरूप में भोगा। शुचि गर्भवती बन जाती है। रोहित का बच्चा एक निरीह के गर्भ में विस्तार पाने लगता है। शुचि रोहित के बच्चे को महसूस करती है। उसे रखना चाहती पर वह रक नहीं पाती। वह अविवाहीत भी है और इसका उत्तरदांयित्व रोहित नहीं ले सकता। वह बच्चे को गर्व से अपनाने की स्थिति में नहीं है। यह महसूस करके नायिका अस्पताल चली जाती है और गर्भपात कराती है। तब लेखिका का मथंन है "हम लोग कब तक उन बातों के लिए कलंकित होते रहेगे जिसे हमने अकेले नहीं किया, निषिद्ध कमरों में घुसने का दुस्साहस दोनों करेगें, पर काठ की चौखटों पर सिर हमारे झुकेगें...सिर्फ हमारे।"[7] शुचि के दर्द को पूरी जाति का दर्द समझती है। प्रकृति का नियम है, अनुभूति का फल केवल देह के कारण स्त्री के पेट में पलेगा। परंतु पुरूष क्यों उस फल का भोंकता नहीं बन सकता? यह कैसा संस्कार है? ऐसे में स्त्री सोंचने के विवश बन जाती है। यह सब सहना पड़ रहा है। "शरीर के कारण....शरीर, शरीर नहीं रह पाता। असली बात वह घट रही है ना.. देह को पकड़ लेते है क्योंकि देह ऐसी है स्थूल उजागर, चुंगल खोर।[8] वह जिस पुरूष को समर्पित होती है, उसीसे संत्रस्त भी है। वह उसका ग्रहण कर जाती है तो भी कलंकित है, क्योंकि वह उसकी ब्याहता नहीं। यदि ब्याहता है और अंश ग्रहण नहीं कर पाती तो भी अपराधिनी है क्योंकि वंशवृक्ष को सतत रखने में असमर्थ होने के कारण बेकार है, बैकाज है।

स्त्री की समानाधिकार का प्रश्न:-

'अनावृत कौन' कहानी की नायिका सोच का अधिकार मांगती है। कैबरे के नाम पर नारी जाति का अपमानात्मक देह प्रदर्शन पत्नी को अभद्र, अमानवीय, अनैतिक लगता है। परंतु प्रकाश के आक्रमक तेवर देखकर वह अनिच्छा पूर्वक चली जाती है, परंतु वहाँ उसका दम घुटता है। प्रकाश सुख झपटना चाहता है, लूटना चाहता है। दोनों एक दूसरें को समझ नहीं पाते। निरी के मन में एक बेगानापन घर करने लगता है और वह अपना ससुराल छोड़कर अपने मैंके चली जाती है। पति अपने अधिकार पर अड़िग है और पत्नी पूरी नारी जाति की लज्जा को बचाने की सोच मात्र के अधिकार पर अविचल है। वह कहती है, "जानते है सब। फिरभी बाप बाजे बजा कर अपनी बेटी को दामाद के साथ सौंपता है.. जानते हुए सारे हिसाब मे अनाटमी का भी एक हिसाब होगा....फिर भी कोई पर्दा..।"[9]

'दूसरे देश काल में' कहानी में भी नारी की स्थिति उस अधिकार की मांग करती है जहाँ प्रेम की स्वतंत्रता हो और उस प्रेम के परिणाम को नर-नारी समान रूप में भोगने को तैयार रहते है। प्रेम हुआ, यौनाचार हुआ, गर्भ हुआ, परंतु उस गर्भस्थ शिशु का क्या दोष जिसे जन्म से पूर्व ही मिटा देने की हठधर्मिता है। क्या स्त्री या पुरूष अधिकार का एक तरफ़ा प्रयोग नहीं कर, करवा रहे?

'सदियों से' कहानी का आधार भी नारी की चेतना को प्रस्तुत करता है। मिन्नी को हेमंत से प्रेम था और प्रेम है। यह दूसरी स्थिति है कि अब वह नरेन की पत्नी है। वह अपने उस प्रेम को भूला नहीं पा रही है। विवश है। अपनी इस विवशता के कारण वह टुकडों में बंटती जा रही है। हेमंत के पत्रों का पुलिंदा मानो हेमंत का शरीर रही है। उन पत्रों में हेमंत की आत्मा बंद है। एक और प्रेम की खींच और दूसरी और पति की परंपरित अधिकारत्मक पुकार। वह सोंचती है कि स्त्री होने क्या यही परिणति है। समाज की और से उसे अधिकार नहीं है, पति की और से उसे मनचाहा मुक्ति नहीं।

'अमूर्त कुछ' कहानी की सुम्मि लड़की है, इसलिए उसे कप्पि के साथ प्रेम करने का, बात करने का, हँसने बोलने का अधिकार नहीं, सुम्मि के भाई का परम मित्र है यह कप्पि। रातदिन का साथ रहता है। परंतु सुम्मि की आँखों में कप्पि के प्रति अनुराग पढ़ते ही भाई तिलमिला जाता है। "मैं सुम्मि का अभिभावक हूँ। उस तक पहुँचने के लिए मेरे आधिपत्य के अंकुश के झेलना होगा। मुझे लांध कर कोई पुल नहीं बनाया जा सकता।"[10]

अभाव ग्रस्तता:-

अभावग्रस्तता के प्रसंग में 'यही तक' कहानी द्दष्टव्य है जहाँ विवशताओं एवं अभावों का अतीत तथा वर्तमान है। पुत्र को इसी अभावग्रस्तता के कारण अल्हड़ अवस्था में ही कमाऊ गृहस्वामी बना दिया गया था क्योंकि उसका पिता परिवार की जिम्मेदारियों को अनदेखा कर गया है। यहाँ नायिका का उत्पीड़न हो रहा है क्योंकि उसे घर के सभी लोगों का दबाव सहना पड़ रहा है। यहां दबाव ही नहीं अपितु अपनाम भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। जब उसके खाने-खेलने के दिन थे, तब एक पलायनकारी पिता ने अपना घर का खर्च चलाने के लिए उसे काम करने के लिए आभिषिकत कर दिया है। कहानी में आर्थिक वैषम्य, निम्नवर्ग एवं जीवन पद्धति का दबावग्रस्त पारूप प्रस्तुत हुआ है।

आर्थिक स्तरीकरण:-

'अमूर्त कुछ' कहानी के कप्पी के पढ़ने-लिखने की आयु में ही पिता के देहांत और घर की आर्थिक परिस्थति के कारण कमाना पड़ता है। वह पुस्तकों का थैला नदी में फेंक आता है और आठवी कक्षा का यह छात्र अपने उत्तर दांयित्व पर व्यग्यं करता हुआ अपने मित्र से कहता है कि "देख यार अपन तेरे से आगे निकल गये। वह मजदूरों की भीड़ में एक गुमनाम चेहरा बन जाता है। अब वह हंमेशा किसी वर्ग विशेष का बेजान प्रतीकों द्वारा पहचाना जायेंगा। उसकी फैकटरी के मालिक उसे अनेक कारणों से तंग करते है। असमय रोककर, निम्न किस्म का कोई निजी काम बताकर उसे छुट्टी भी नहीं देते।"[11]

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

अकेलापन:-

आज के यांत्रिकी युग में मनुष्य के लिए अकेलेपन से जूझना सबसे दुष्कर कार्य है। परंतु अकेलापन अधिकतर संबंधो के कारण उपजता है। 'उसका आकाश' कहानी में यांत्रिक व्यस्तता के युग में उपेक्षित एक पिता की कहानी है। लकवे से ग्रस्त होने पर उसका सोंचना, अकेलापन, काम न कर पाने की स्थिति, दूसरों की मदद लेने की मजबूरी आदि का चित्रण है। बहू जब उसका काम करती है तब उसके चेहरे के भाव कैसे होती है, लड़का कैसे उसका हाल पूँछकर कमरे से अपनी चीजें लेकर चला जाता है, आदि बातें अनायास ही कहानी में आ गयी है। वह किस तरह चारपाई पर पड़े-पड़े आकाश को निहरता रहता है। पोता वरूण अपने मित्रों के साथ दादाजी के कमरे में खेलता है, तब उसे बहुत अच्छा लगता है। लेकिन कुछ ही दिनों में बच्चे उब जाते है और तब उसे कमरें की ठड और कमरे का अकेलापन महसूस होता है।

कुछ ही दिनों में उसके घर के सामने एक मकान बाँधा जाता है। जब वह दुमंजिला मकान तैयार होता है तो वहाँ पर धूप, उजाला और हवा सब कम हो जाता है। वह अपनी चारपाई दूसरी तरफ ड़ालने के लिए कहता है। यह सब करने के बाद वह पड़े-पड़े अपने आकाश से उस हिस्से की तरफ देखना चाहता है लेकिन वह उसे दिखायी नहीं देता। उस मकान की वज़ह से उसका पड़े-पड़े उसके आकाश के उस हिस्से की तरफ देखने का सुख भी छीन जाता है। यहाँ बीमार व्यक्ति की मानसिकता है, जिसके सामने समय अच्छी तरह से कैसे बितायें यह सवाल है। जिन स्थितियों में जिस जगह उसे रखा है वहाँ उसी स्थिति में वह स्वयं को पूरे परिवार में अकेला अनुभव करने लगता है – "अकेले लंबे दिन-रात ठिठक-ठिठककर कलेंजें पर अपना वज़न महसूस कराते गुजरेंगे।"[12]

अजनबीपन:-

अजनबीपन, अपरिचय, परायापन अथवा बेगानपन अस्तित्ववादी की देन है। संबंधों में कृत्रिमता व आधुनिक जीवन मूल्यों में स्व-केद्रन होने के कारण जीवन व्यवहार का विखंडीकरण हो रहा है। 'गलत होता पंचतंत्र' कहानी की नारी का कुछ होने का स्वप्न – एक समर्थ व्यक्तित्व का स्वप्न – एक समर्थ व्यक्तित्व का स्वप्न मातृत्व के कारण खंडित हो जाता है, और वह अपने पुत्र के प्रति ही अजनबीपन का अनुभव करने लगती है – "वह ऊँची उड़ान से भरा, जीवन की छाती पर दौड़ता एक आत्मनिर्भर कदम है, मैं उसकी तिरछी छाह में अपनी सपनीली रचनाओं को ढूढती एक अपरिचित छाया हूँ, जिसे अभी भी जीवन में सामंजस्य साधना शेष है।"[13]

उपसंहार: -

राजी शेठ ऐसी लेखिका है जिन्होंने बहुत कुछ सोंचने के बाद लिखा है, जिसमें उन्होंने स्त्री की स्थिति को दिखाया गया है। जिसमें स्त्री की यातना, दर्द, सुख, भोग, वाद-विवाद, अकेलापन, अलगाव बातों को लेखिका अपनी कहानियों में दिखाती है। स्त्री सिर्फ भोग्या ही नहीं है, वो अपनी इच्छा से जीवन यापन कर सकती है। स्त्री अपने अधिकारों के लिए भी मुखर हो सकती है, सिर्फ वो अपने पति की इच्छा अनुसार नहीं जी सकती। इन सभी कहानियों में स्त्रियों और पुरूषों के अलग-अलग रूप दिखाये गयें हैं। जिसमें स्त्री अपने विचारों को मुखर होकर कहती है और उसे उसका पति सहज स्वीकार भी करता है और जहाँ पति उसे स्वीकार नहीं करते तो उन्हें किस तरह से स्वीकार करवाना है वो भी वह जानती है। लेखिका ने इन सभी कहानियों में स्त्रियों की अलग-अलग विचारधारा को प्रस्तुत किया है। जिसमें लड़की का अपने भाई के दोस्त से प्यार होना उसके भाई को पंसद नहीं आता और अपनी बहन को उससे दूर रहने के लिए कहता है पर वो उससे दूर नहीं रह पाती। वैसे ही एक कहानी है जिसमें शादी शुदा होने के बावजूद भी स्त्री अपने पूराने प्रेमी को याद करती है और अपने पति से इन सभी बातों को छुपाती है, दूसरी वैसी ही एक कहानी है जिसमें तलाक हो जाने के बाद भी वो अपने पूराने पति को याद करती है उसे हरकदम उसकी याद आ जाती है, वैसी ही सभी कहानियां अलग-अलग रूप में लिखी गयी है। कोई-कोई ज़गह स्त्री मुखर भी है कहीं वह अपने परिवार से दबी भी हुई है।

संदर्भ सूचि

[1] सेठ राजी, सदियों से, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर, संस्करण - 2005
[2] राजकमल प्रकाशन समूह. कोम (net)
[3] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 61
[4] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 67
[5] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 68
[6] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 151
[7] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 159
[8] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 26
[9] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 106
[10] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 107
[11] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 81
[12] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 46
[13] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 66
[14] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 93
[15] सेठ राजी, सदियों से, पृष्ठ - 98

https://www.gapbhasha.org/